❶
ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 46, अंक 44
एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 30 अक्तूबर, 2023 से
रविवार 5 नवम्बर, 2023
विक्रमी सम्वत् 2080
सृष्टि सम्वत् 1960853124
दयानन्दाब्द : 200 पृष्ठ 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये
दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें -
www.thearyasamaj.org/aryasandesh

यज्ञ संबन्धित जानकारी प्राप्त करने के लिए
7428894020 मिस कॉल करें

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के अवसर पर रिवर फ्रंट अहमदाबाद में

गुजरात प्रान्तीय 'ज्ञान ज्योति पर्व' उल्लास पूर्वक सम्पन्न

दयानन्द ने वैचारिक क्रान्ति से समाज में व्याप्त अंधविश्वास, पाखण्ड, छूआछूत जैसी कुरीतियां दूर करने में जागृति पैदा की - आचार्य देवव्रत

'विरासत भी और विकास भी' नारे के साथ हम अमृतकाल को अपनी संस्कृति का स्वर्णकाल बनाने के लिए प्रतिबद्ध हों - भूपेन्द्र पटेल

गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा अहमदाबाद में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर 8 अक्टूबर 2023 को अहमदाबाद के रिवर फ्रन्ट पर गुजरात प्रान्तीय 'ज्ञान ज्योति पर्व' सम्पन्न हुआ। जिमसें गुजरात के माननीय राज्यपाल आचार्य देवव्रत और गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्रभाई पटेल, राज्य मंत्री श्री जगदीशभाई विश्वकर्मा, सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र

आर्य जी आर्य, गुजरात प्रान्तीय सभा के महामंत्री श्री दीपकभाई ठक्कर ने 200 कुंडीय यज्ञ की पूर्णाहुति में भाग लिया।

आर्य वीर दल तथा आर्य वीरांगना दल द्वारा बहुत ही सुन्दर मार्च पास्ट किया गया और सभी मुख्य अतिथियों और गणमान्य व्यक्तियों का गार्ड ऑफ ऑनर के साथ स्वागत किया गया। गुजरात प्रान्तीय सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र

- शेष पृष्ठ 5-6 पर

समस्त आर्यसमाजों एवं शिक्षण संस्थानों से दिल्ली में आर्यसमाज द्वारका के लिए

डीडीए प्लाट क्रय करने हेतु आर्थिक सहयोग की आवश्यक अपील

मान्यवर,

सादर नमस्ते !

आशा है प्रभु कृपा से आप सपरिवार स्वस्थ एवं सानन्द होंगे।

आज आपको ये पत्र विशेष कारण से लिख रहे हैं। दिल्ली में द्वारका नाम की उपनगरी अपने आपमें विशाल रूप लेती जा रही है। इसकी शुरुआत लगभग 1990 में हुई थी। अब ये एशिया की सबसे बड़ी Planned Colony का रूप ले चुकी है और तेजी से इसका राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय महत्व भी बढ़ता ही जा रहा है।

इसी द्वारका उपनगरी में बहुत-सी धार्मिक संस्थाओं के केन्द्र खुल चुके हैं मन्दिर भी, गुरुद्वारा भी और यहां तक कि मस्जिद भी और कई चर्च भी किन्तु अभी तक आर्यसमाज मन्दिर वहां नहीं बनाया जा सका है।

- शेष पृष्ठ 7 पर

कृपया अपनी सहयोग राशि का चैक/बैंक ड्राफ्ट **'आर्य समाज टैम्पल सोसायटी सैक्टर-11 द्वारका'** के नाम **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - 15 हनुमान रोड नई दिल्ली-110001'** के पते पर भेजें। आप अपनी सहयोग राशि निम्नांकित विवरण के अनुसार बैंक खाते सीधे/ऑन लाईन ट्रांसफर भी करा सकते हैं। कृपया सहयोग राशि सीधे/ऑनलाइन जमा कराते ही **डिपोजिट स्लिप/ट्रांस्फर मैसेज** को अपने नाम व पते के साथ आर्यसमाज द्वारका के उप प्रधान **श्री उमेश नन्दा जी मो. 9811215736** को व्हाट्सएप्प भेजने की कृपा करें, जिससे आपको सहयोग राशि की रसीद तत्काल भेजी जा सके।

A/c Name : **Arya Samaj Temple Society Sector 11 Dwarka**
Bank A/c No : 4447000100113452 **IFSC Code :** PUNB0444700
Bank Name : Punjab National Bank Dwarka Sec. 10, New Delhi

ओ३म्
दिल्ली की समस्त आर्य समाजों एवं संस्थाओं की ओर से
महर्षि दयानन्द सरस्वती
की 200वीं जयंती के विशेष आयोजनों की श्रृंखला में
140वां
निर्वाण दिवस
की पूर्व संध्या पर भव्य आयोजन
कार्तिक, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी, विक्रमी सम्वत् 2080, तदनुसार
शनिवार, 11 नवम्बर 2023
समय : अपराह्न 3:30 बजे से सायं 6:30 बजे तक
स्थान : रामलीला मैदान, अजमेरी गेट, नई दिल्ली-2
कार्यक्रम : भजन, ध्वजारोहण, दीप प्रज्ज्वलन, महर्षि जीवन भव्य नाटिका
यज्ञ : सायं 5:00 बजे
आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य (पं.)
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

ओ३म्
आर्य समाज की पहल
आर्थिक रूप से कमजोर बारहवीं पास छात्रों के आगे की पढ़ाई के लिए छात्रवृत्ति योजना
आर्य प्रगति छात्रवृत्ति परीक्षा 2023
• पात्रता: आवेदन प्राप्ति की अंतिम तिथि तक बारहवीं कक्षा या समकक्ष कक्षा में उत्तीर्ण होना अनिवार्य है।
• आयु सीमा: आवदेन की अंतिम तिथि तक 16 से 25 वर्ष ।
• छात्रवृत्ति हेतु अभ्यर्थियों का लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार के आधार पर चयन किया जाएगा।
• पात्रता परीक्षा ऑनलाइन वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के माध्यम से ली जाएगी।
• पात्रता परीक्षा का विषय सामान्य ज्ञान और रिजनिंग पर आधारित होगा।
आवेदन की अंतिम तिथि 15 नवम्बर 2023
आवेदन करने के लिए वेबसाइट www.aryapragati.com पर जाए।
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:
9311721172 E-mail: dss.pratibha@gmail.com

देववाणी-संस्कृत

अमृत-आत्मज्ञान

वेद-स्वाध्याय

यत्रा सुपर्णा अमृतस्य भागमनिमेषं विदथाभिस्वरन्ति।
इनो विश्वस्य भुवनस्य गोपाः स मा धीरः पाकमत्रा विवेश।। - ऋ. 1/164/21
ऋषिः दीर्घतमाः।। **देवता** - विश्वेदेवाः।। **छन्दः त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ - यत्र = जहां, इस शरीर में **सुपर्णाः** = सुपतनशील इन्द्रियां **अनिमेषम्** = निरन्तर **अमृतस्य** = अमृतज्ञान के **भागम्** = अपने भाग का लाकर **विदथा** = वेदन के साथ **अभिस्वरन्ति** = चल रही हैं, मानो बोल रही हैं **अत्र** = उस, इस मेरे शरीर में **विश्वस्य भुवनस्य** = सब ब्रह्माण्ड का **इनः** = ईश्वर **गोपाः** = और सब भुवन का रक्षक **सः धीरः** = वह धीमान् ज्ञानमय **पाकं मा** = मुझ पक्तव्य में (अपरिपक्व में) **आविवेश** = प्रविष्ट होवे।

विनय- मनुष्य एक कच्चे घड़े के समान है, जब तक कि यह आत्मज्ञान की अग्नि में पक नहीं जाता। मैं कच्चा घड़ा इस संसार-सागर में पड़ा हुआ घुल रहा हूं, नष्ट होता जा रहा हूं। हे जगदीश्वर! यदि तुम्हारे ज्ञान की अग्नि की आंच मुझे शीघ्र पका न देगी तो मैं जल्दी ही समाप्त हो जाऊंगा। मैं अभी तक 'पाक हूं'- पक्तव्य हूं, कच्चा हूं। तुम पक्व हो, विपक्वप्रज्ञ हो। तुम शीघ्र मुझमें प्रवेश करो। तुम अमृत हो, मैं अभी तक मर्त्य हूं। तुम इस भुवन के ईश्वर हो, मैं अनीश हूं। जिस दिन मुझे आत्मा का ज्ञान हो जाएगा, अपनी अमरता का भान हो जाएगा तो मैं पक जाऊंगा। आत्मज्ञानी, अमर, परिपक्व होकर मैं तो संसार में पड़ा हुआ भी गल नहीं सकूंगा। मुझमें प्रविष्ट होकर मुझे अमर कर दो, पका दो। इस कच्चे घड़े में (शरीर में) यद्यपि इन्द्रियां लगातार कुछ-न-कुछ ज्ञान लाती हुई चल रही हैं, परन्तु उनके लाये हुए ज्ञान में-जुगनू के-से तुच्छ प्रकाश में-वह अग्नि नहीं है जो मुझे पका सके। सच तो यह है कि वे इन्द्रियां जिस पूर्ण अमर ज्ञान के एक अंश को अपने वेदन में लाती हैं, उसी की अभिलाषा अब मुझे लग गई है। उन्हीं द्वारा पता लगा है कि कोई अमृत ज्ञान भी है जिसके द्वारा मैं पूरा पक सकता हूं। इन्द्रियों में जो वेदन है वह तुम्हारे ही अपार ज्ञान, अनन्त चैतन्य से आता है। यह समझ आ जाने पर आज ये इन्द्रियां मेरे लिए जो कुछ ज्ञान लाती हैं उसमें मुझे अमरता का ही सन्देश सुनाई देता है। ये जो भी कुछ वेदन करती हैं उसमें मुझे वे यही बोल रही हैं'-तू अमर बन, अमर बन! अपने को पका ले, पका ले!'' अतः हे सब ब्रह्माण्ड के स्वामिन्! मुझे पक्का करने के लिए तुम मेरे इस शरीर के भी स्वामी हो जाओ। हे त्रिभुवन के रक्षक! इस शरीर की भी रक्षा करो। हे धीर! ज्ञानमय! तुम्हारे प्रविष्ट हुए बिना यह कच्चा घड़ा कब तक रक्षित रह सकता है।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

समलैंगिक विवाह को मान्यता नहीं : सुप्रीम कोर्ट के फैसले का स्वागत

आर्यसमाज स्थापना दिवस पर माननीय गृहमन्त्री श्री अमित शाह जी की उपस्थिति में आर्यसमाज ने किया था समलैंगिकता पर सरकार के कदम का समर्थन

ईश्वर की अमृतवाणी वेद की समस्त ज्ञान राशि हमें जीवन जीने की कला सिखाती है। वेदों पर आधारित हमारे 16 संस्कार पग-पग पर हमें एक आदर्श और परिष्कृत जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं। वेदों की दिव्य परंपराओं पर चलकर हमारे पूर्वज महान, बलवान, बुद्धिमान, रूपवान, गुणवान आदि विशेषताओं से युक्त अपार साहस और वीरता के धनी थे। हमारे महापुरुषों के तपोबल के सामने पाप और पापी भी थरथर कांपा करते थे। क्योंकि उनका वैदिक सिद्धांतों पर आधारित साधना पूर्ण उत्तम जीवन अद्‌भुत और अनुपम था।

भारत की यह तपोभूमि गौतम, कपिल, कणाद, जैमिनी पर्यंत ऋषि- मुनियों, सहित मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम, योगीराज श्री कृष्ण, नचिकेता, भीष्म पितामह, महर्षि दयानन्द सरस्वती आदि महान पुरुषों की जन्मभूमि रही है। लेकिन आजकल पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में आकर देश की युवा पीढ़ी पतन के रास्ते पर बढ़ती जा रही है। मानव जीवन के सबसे कल्याणकारी गृहस्थ आश्रम विवाह के नाम पर समाज में अलग-अलग तरह की विसंगतियां और विकृतियां पनपती जा रही हैं। जहां एक तरफ बिना विवाह के लिविंग रिलेशन में युवक- युवतियां अनैतिक और अमर्यादित तरीके से पति-पत्नी के रूप में एक साथ रह रहे हैं। जिसे हमारी न्याय पालिका ने पहले ही स्वीकृति दे रखी है। जबकि विवाह संस्कार के विषय में आर्य समाज के संस्थापक और महान समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार आर्य समाज की मान्यता है कि युवक-युवतियां जातिवाद की दीवारों को तोड़कर अपने गुण-कर्म-स्वभाव के अनुरूप जीवन साथी चुनकर विवाह करें और प्रजनन करके ज्ञान से परिपूर्ण संतान उत्पन्न करके राष्ट्र एवं मानव समाज की सेवा के लिए समर्पित करें। शास्त्रोक्त मतानुसार धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष को लक्ष्य में रखकर ही गृहस्थ धर्म का पालन करना उचित माना गया है।

किन्तु आधुनिक परिवेश में युवा पीढ़ी लिविंग रिलेशन में रहने से भी आगे समलैंगिक संबंधों की स्वीकृति न्यायालय से प्राप्त कर चुकी है। भारत की न्याय पालिका ने 2018 में समलैंगिकता को अपराध की श्रेणी से बाहर कर दिया था। ज्ञात हो कि 7 सितंबर 2018 को सुप्रीम कोर्ट की 5 जजों की संवैधानिक पीठ ने भारतीय दंड संहिता की धारा 377 के हिस्से को अमान्य कर दिया था, जिससे भारत में समलैंगिकता को कानूनी बना दिया गया था। इस अमानवीय और अप्राकृतिक पशु प्रवृत्ति पर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने उस समय ही आदिम सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से आपत्ति जताते हुए कहा था कि आजकल आर्यावर्त में कई एक राजा और धनाढ्य, बालकों से भी बुरा काम करते हैं, यह बड़ा आश्चर्य है कि स्त्री का काम पुरुषों से लेते हैं। महर्षि इस समलैंगिकता जैसे कुकृत्य पर रोष व्यक्त करते हुए लिखते हैं कि जो लड़के बाजी करते हैं वे तो सुअर और कौवे के जैसे हैं क्योंकि जैसे सुअर व कौवे मल से बड़ी प्रीति रखते हैं और अरुचि कभी नहीं करते। वैसे वे पुरुष भी मल जिस मार्ग से निकलता है उस मार्ग से बड़ी प्रीति रखते हैं, वे मूर्ख पाप ही कमाते हैं।

महर्षि दयानन्द ने जिस कुकृत्य को महामूर्खता और पाप की संज्ञा बहुत पहले दी थी, वह मूर्खता तो आज सारी सीमाएं तोड़कर भयानक रूप धारण करती जा रही है। यह सर्व विदित है कि लिविंग रिलेशन और समलैंगिक संबंधों से भी आगे पिछले साल

150 वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने इस अमानवीय कुकृत्य का विरोध करते हुए कहा था जो लड़के बाजी करते हैं वे तो सुवर और कौवे के जैसे हैं ..

दिल्ली हाई कोर्ट समेत अलग-अलग अदालतों में समलैंगिक विवाह को मान्यता देने की मांग को लेकर याचिकाएं दायर हुई थीं। 14 दिसंबर को सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली हाई कोर्ट में पेंडिंग दो याचिकाओं को ट्रांसफर करने की मांग पर केंद्र से जवाब मांगा था। इन याचिकाओं में समलैंगिक विवाह को मान्यता देने के निर्देश जारी करने की मांग की गई थी। इस विषय पर केन्द्र सरकार ने कहा था कि समलैंगिक विवाह को अनुमति देने न देने का अधिकार सुप्रीम कोर्ट को नहीं है।17 अक्टूबर 2023 को सुप्रीम कोर्ट ने समलैंगिक विवाह को क़ानूनी मान्यता देने की माँग को ठुकराते हुए अपने निर्देश में कहा कि अदालत क़ानून नहीं बना सकती, अदालत सिर्फ़ क़ानून की व्याख्या कर सकती है। क़ानून बनाना विधायिका का कार्य है। विवाह मौलिक अधिकार नहीं है, हालाँकि कोर्ट ने समलैंगिक जोड़ों की जिन्दगी आसान और सुविधाजनक बनाने के लिए केंद्र सरकार से उच्च स्तरीय समिति गठित कर खाते में नॉमिनी, सेवानिवृत्ति लाभ आदि के मुद्दों पर विचार करने को कहा है। कोर्ट ने यह भी कहा की समलैंगिक लोगों को साथ रहने का अधिकार है और उन्हें प्रताड़ित नहीं किया जाना चाहिए। मौजूदा कानून न्याय शास्त्र और व्यक्तिगत अधिकारों की व्याख्या करने वाला यह फ़ैसला चीफ़ जस्टिस डी.वाई चंद्रचूड, जस्टिस संजय किशन कोल, जस्टिस एस रविन्द्र भट, जस्टिस सीमा कोहली, फॉर जस्टिस नरसिम्हा की संविधान पीठ ने सुनाया। 366 पेज के इस फ़ैसले में पाँच न्यायाधीशों में से चार ने अलग अलग फ़ैसले दिए। सुप्रीम कोर्ट ने इस याचिका में जिसमें समलैंगिक विवाह को क़ानूनी मान्यता देने की माँग की गई थी, सुप्रीमकोर्ट ने 11 मई को फ़ैसला सुरक्षित रख लिया था। पीठ ने चार अलग-अलग फ़ैसले सुनाने में क़रीब दो घंटे का समय लिया। चीफ़ जस्टिस चंद्रचूड में 247 पेज के अपने फ़ैसले में कहा कि कोई आदेश निर्देश जारी करते वक़्त विधायिका के क्षेत्राधिकार का अतिक्रमण नहीं किया जा सकता। संविधान स्पष्ट रूप से शादी के मौलिक अधिकार को मान्यता नहीं देता। क़ानून द्वारा दी गई सामग्री के आधार पर इस संस्था को मौलिक अधिकार के दायरे से आगे नहीं बढ़ाया जा सकता। हालाँकि वैवाहिक रिश्ते के कई पहलू हैं जिनमें संवैधानिक मूल्य प्रतिबंधित होते हैं। इनमें मानव गरिमा और जीवन की स्वतंत्रता का अधिकार शामिल है। जस्टिस चंद्रचूड ने कहा कि यह अदालत न तो विशेष विवाह अधिनियम की संवैधानिक वैधता को रद्द कर सकती है और न ही उसके प्रावधानों की फिर से व्याख्या कर सकती है क्योंकि ऐसा करना नया क़ानून देने जैसा होगा।

- शेष पृष्ठ 6 पर

साप्ताहिक स्वाध्याय

विद्या के स्रोत में स्नान

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित जीवनी महर्षि दयानन्द से क्रमशः साभार

महर्षि दयानन्द का जीवन पूरे यति का जीवन था। जिस दिन से वह जिज्ञासु बने, उस दिन से मन, वाणी और कर्म से ब्रह्मचारी रहने का कठोर व्रत धरण किया। विद्यार्थी जीवन में महर्षि दयानन्द ने पूर्ण ब्रह्मचारी रहने का उद्योग किया। एक दिन की घटना है कि आप नदी के तट पर सन्ध्या कर रहे थे। ध्यान ुला तो क्या दे ते हैं कि एक युवती चरणों का स्पर्श कर रही है। चरणस्पर्श भत्तिफ से था, परन्तु पूर्ण ब्रह्मचारी ने उतने स्त्री- स्पर्श को भी पाप समझा और कई दिनों तक एकान्त में जाकर निराहार व्रत द्वारा हृदय को शुद्ध किया। ..... ''देश का उपकार करो। सत् शास्त्रों का उद्धार करो। मत-मतान्तरों की अविद्या को मिटाओ और वैदिक धर्म फैलाओ!'' दयानन्द ने आदेश को अंगीकार किया। अन्त में आशीर्वाद देते हुए दण्डी जी ने और भी कहा- 'मनुष्यकृत ग्रन्थों में परमेश्वर और ऋषियों की निन्दा है और ऋषिकृत ग्रन्थों में नहीं, इस कसौटी को हाथ से न छोड़ना!'.....

प्रकाशक : आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट,
सह प्रकाशक - दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)
पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑनलाइन www.vedicprakashan.com पर
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें

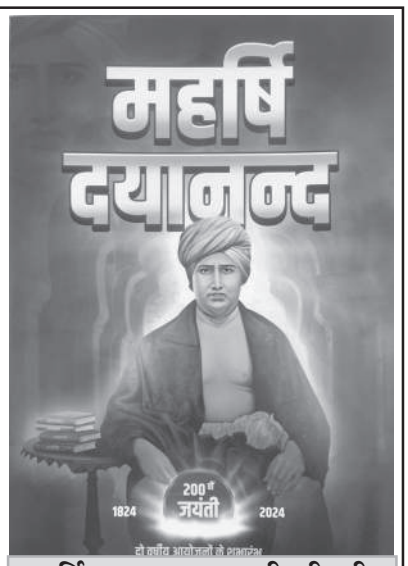

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर प्रकाशित

दण्डी जी का स्वभाव उग्र था। कभी-कभी बहुत नाराज हो जाते थे। शिष्यों के हाथ पर लाठी भी जमा देते थे। एक बार महर्षि जी की भी बारी आ गई। कहते हैं कि लाठी की उस चोट का निशान महर्षि जी के हाथ पर मरणपर्यन्त बना रहा जिसे देखकर वह गुरु के उपकारों का स्मरण किया करते थे। एक बार छोटे-से अपराध पर ड्योढ़ी बन्द कर दी गई। तब योग्य शिष्य ने दो हितैषियों से सिफारिश कराई। सिफारिश से सन्तुष्ट होकर गुरु ने शिष्य को क्षमा कर दिया।

महर्षि दयानन्द का जीवन पूरे यति का जीवन था। जिस दिन से वह जिज्ञासु बने, उस दिन से मन, वाणी और कर्म से ब्रह्मचारी रहने का कठोर व्रत धारण किया। विद्यार्थी जीवन में महर्षि दयानन्द ने पूर्ण ब्रह्मचारी रहने का उद्योग किया। एक दिन की घटना है कि आप नदी के तट पर सन्ध्या कर रहे थे। ध्यान खुला तो क्या देखते हैं कि एक युवती चरणों का स्पर्श कर रही है। चरणस्पर्श भक्ति से था, परन्तु पूर्ण ब्रह्मचारी ने उतने स्त्री- स्पर्श को भी पाप समझा और कई दिनों तक एकान्त में जाकर निराहार व्रत द्वारा हृदय को शुद्ध किया।

दण्डीजी से महर्षि ने अष्टाध्यायी, महाभाष्य आदि व्याकरण-ग्रन्थों के अतिरिक्त अन्य आर्ष ग्रन्थों का भी अध्ययन किया। इससे यह न समझना चाहिए कि आपने गुरु से केवल ग्रन्थों की विद्या ही प्राप्त की उस ग्रन्थविद्या से कहीं बढ़कर वे भाव थे, जो उन्हें गुरु से प्राप्त हुए। आधुनिक या अर्वाचीन ग्रन्थों को छोड़कर प्राचीन आर्ष ग्रन्थों में श्रद्धा, मूर्ति-पूजा आदि कुरीतियों से वैराग्य और कठोर संयम, इन सबके लिए महर्षि दयानन्द अपने गुरु के आभारी थे।

विद्याध्ययन समाप्त हुआ। रीति के अनुसार शिष्य कुछ लोंगों की भेंट लेकर गुरु के चरणों में उपस्थित हुआ और निवेदन करने लगा कि महाराज, मेरे पास और कुछ नहीं है जो भेंट करूं, इस कारण केवल आध सेर लोंग लेकर उपस्थित हुआ हूं। गुरु ने कहा-मैं तुझसे ऐसी चीज मांगूंगा जो तेरे पास उपस्थित है। महर्षि दयानन्द के बद्धांजलि होने पर गुरु ने आदेश किया- (बड़े दुःख की बात है कि गुरु के उस समय के शब्द यथार्थ रूप में प्राप्त नहीं होते। जीवनचरित लिखने वालों ने दण्डी जी के वाक्य अपनी-अपनी रुचि के अनुसार गढ़े हैं। पं० लेखराम जी के सम्पादित किये जीवन-चरित में जो शब्द दिये गए हैं वे बहुत कुछ स्वाभाविक हैं। यह कहा जा सकता है कि यदि दण्डी जी ने ठीक वे शब्द नहीं कहे थे तो कम-से-कम भावार्थ वही होगा। वहां दण्डी जी के निम्नलिखित शब्द दिये गए हैं-)

''देश का उपकार करो। सत् शास्त्रों का उद्धार करो। मत-मतांतरों की अविद्या को मिटाओ और वैदिक धर्म फैलाओ!'' दयानन्द ने आदेश को अंगीकार किया। अन्त में आशीर्वाद देते हुए दण्डी जी ने और भी कहा- 'मनुष्य कृत ग्रन्थों में परमेश्वर और ऋषियों की निन्दा है और ऋषिकृत ग्रन्थों में नहीं, इस कसौटी को हाथ से न छोड़ना!'

इस अमूल्य उपदेश को शिरोधार्य करके महर्षि दयानन्द संन्यासी अपने गुरु के द्वार से विदा हुए। जो वस्तु पर्वत की चोटी पर, वन की गहराई में, नदियों के प्रवाह में, और महन्तों के डेरों में ढूंढी, पर न मिली, वह अमृत के प्यासे महर्षि दयानन्द को मथुरापुरी में दण्डी विरजानन्द के चरणों में मिली। वह वस्तु विद्या और विवेक-बुद्धि थी। उस वस्तु को पाकर, ब्रह्मचर्य के तेज से तेजस्वी ब्रह्मचारी संसार-क्षेत्र में प्रवेश करता है। -***क्रमशः***

बाल बोध

समय है मूल्यवान सम्पदा - समय का रखें ध्यान

बच्चो, आर्य संदेश के इस अंक में हम समय के सदुपयोग पर बात करेंगे। समय बहुत मूल्यवान संपदा है। समय सबके लिए समान है। कुछ विद्यार्थी समय का सदुपयोग करते हैं, कुछ नहीं करते और कुछ दुरुपयोग करते हैं। समय एक गति है, एक बहाव है, जो अनवरत बहता है। इस अमूल्य समय की धारा को पहचानकर कुछ विद्यार्थी सफलता के उच्च शिखर पर पहुंचकर अपना, अपने माता-पिता का और अपने राष्ट्र का नाम ऊंचा करते हैं। दूसरी तरफ कुछ ऐसे भी होते हैं जो समय की कीमत को नहीं पहचानते और असफल होने पर अपने दुर्भाग्य को कोसते ही रह जाते हैं। लेकिन समय फिर लौटकर नहीं आता, इसलिए समय की गति को पहचानकर अपने जीवन को सफल बनाओ।

विद्यार्थी जीवन में खेलने-कूदने का, हास-परिहास का, मनोरंजन और प्रसन्न रहने का पढ़ाई के साथ बहुत गहरा संबंध है। पर समय सारिणी बहुत ज़रूरी है। दुनिया में जिसने भी सफलता का परचम लहराया है, उनकी यह खास बात रही कि उन्होंने अपने समय का सदुपयोग किया। क्योंकि इसी समय के प्रवाह में विद्यार्थी प्रोफेसर, वैज्ञानिक, इंजीनियर, डॉक्टर या वह जो कुछ भी बनना चाहे, बन सकता है। इसके विपरीत वह समय बरबाद करके स्वयं बरबाद भी हो सकता है, उसके लिए पतन के रास्ते भी सदैव खुले रहते हैं। इसलिए अपने अनमोल समय को उत्तम कार्यों के लिए विभाजित करके अपनी प्रतिभा का समुचित विकास करें। खेल (क्रीड़ा) एक ऐसा विषय है-जिसमें विद्यार्थी का ध्यान एक स्थान पर टिक जाता है। फिर उसे अन्य कुछ याद नहीं रहता, वह पूरी तरह खेल में मग्न हो जाता है। खेलने पर शरीर से पसीना निकलता है, रक्त संचार होता है और शरीर स्वस्थ रहता है। शारीरिक विकास के लिए उपयोगी है। लेकिन इतना ज़्यादा खेलना भी उचित नहीं कि शरीर थक जाए और जब आप स्वाध्याय करने या कोई अन्य कार्य करने लगें तो शरीर में दर्द होने के कारण आपका ध्यान बार-बार खेल पर ही जाए। यूं तो विद्यार्थी को मधुर व्यायाम करना चाहिए। थोड़े उपयोगी योगासन, दौड़, सर्वांग सुन्दर व्यायाम आदि लेकिन समय का ध्यान रखकर ऐसा करना चाहिए। ऐसे नहीं करना चाहिए कि खेलने पर आए तो बस पूरा दिन खेलते ही रहे।

हंसना सकारात्मक प्रक्रिया है। हंसने से मस्तिष्क विकसित होता है। विद्यार्थी को दिन में चार बार निःसंकोच होकर हंसना चाहिए लेकिन यह ध्यान रहे कि तुम्हारे हंसने से किसी को दुःख न पहुंचे। किसी को चिढ़ाना नहीं, व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग मत करना और अच्छी बातों पर हंसना अच्छी बात होती है। अगर कोई आपका हितैशी आपको डांट दे, तो आप उस समय उसको हंसी में टाल दो, कभी अकेले में उस पर विचार तो कर लेना पर मन में गांठ मत बांधना। अपने स्वभाव को सौम्य, शिष्ट और हंसमुख बनाकर रखना उज्ज्वल भविष्य का संकेत है। हंसने के लिए कुछ अच्छे चुटकुले हो सकते हैं, कोई अंताक्षरी, प्रतियोगिता कर सकते हैं, हंसने के कई और बहाने हो सकते हैं। लेकिन हंसी मज़ाक में इतना मत रम जाना कि दुनिया तुम पर ही हंसने लगे। टी.वी, मोबाईल आदि मनोरंजन के लिए जितना उपयोगी है, उससे कहीं ज्यादा खतरनाक भी सिद्ध हो सकता है। कोरोना काल से तो आनलाईन क्लास चलने के कारण

- ***शेष पृष्ठ 7 पर***

महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयन्ती के अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

विभिन्न सेवा बस्तियों, आर्यसमाजों में कैंसर एवं सामान्य स्वास्थ्य जाँच शिविर सम्पन्न

सर्वविदित यही है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा निरन्तर मानव सेवा और राष्ट्र कल्याण के कार्यों के प्रति समर्पित है। सभा द्वारा जहाँ एक तरफ झुग्गी-झोपड़ियों में, सेवा बस्तियों में रहने वाले मज़दूर स्त्री-पुरुष और बच्चों के स्वास्थ्य जाँच शिविर के आयोजन किए जाते हैं, वहीं पर समय-समय पर विशेष जाँच शिविरों के भी आयोजन किए जाते हैं। इस क्रम में 14 अक्टूबर 2023 को राजीव गांधी कैंसर इंस्टिट्यूट रोहिणी के सहयोग से आर्य समाज मल्कागंज दिल्ली में नि:शुल्क कैंसर स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन किया गया। जो सुबह 10 बजे से लगातार 4 बजे तक चलता रहा। शिविर में सुयोग्य चिकित्सकों द्वारा कैंसर की जाँच की गई और मानव मात्र के कल्याण की कामना की।

अभी पिछले दिनों 13, 14 और 21 अक्टूबर को माया पुरी फेस 2, 3 और अन्य स्थानों पर तथा 28 अक्टूबर 2023 को सिग्नेचर ब्रिज के साथ सिंधुनगर और आर्य समाज झिलमिल कालोनी में स्वास्थ्य जांच शिविर सफलता पूर्वक संपन्न हुए जिनमें सैकडों लोग लाभान्वित हुए। इन शिविरों के अन्तर्गत निम्नांकित जांच की जा रही हैं।

★ पप स्मियर टेस्ट (Pap smear Test)
★ कलिनिकल ओरल एग्जामिनेशन (Clinical Oral examination)
★ कलिनिकल ब्रेस्ट एग्जामिनेशन (Clinical Breast Examination)
★ ब्लड प्रेशर मॉनिटर (Blood Pressure Monitor)
★ रैंडम ब्लड शुगर टेस्ट (Random Blood Sugar)

14 अक्तूबर को राजीव गांधी कैंसर इंस्टीट्यूट के सहयोग से आर्यसमाज मलकागंज में आयोजित शिविर एवं 13-14, 21 अक्तूबर को मायापुरी तथा 28 अक्तूबर को सिन्धु नगर तथा आर्यसमाज झिलमिल कालोनी में सुयोग्य चिकित्सकों द्वारा स्वास्थ्य जांच कराते रोगीजन।

आर्य समाज लेखू नगर त्रिनगर में भजन संध्या सम्पन्न

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जन्म शताब्दी के अवसर पर आर्य समाज लेखू नगर त्रिनगर में तीन दिवसीय भजन संध्या का आयोजन किया गया (29 सितंबर से 1 अक्टूबर तक) जिसमें कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य समाज के प्रधान एवं निगम पार्षद कोहाट दिल्ली से श्री अजय रवि हंस ने की । इस कार्यक्रम को डॉ॰ हर्षवर्धन जी (सांसद चांदनी चौक) और श्री विनय आर्य जी, महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने संबोधित किया। श्री विनय आर्य जी ने अपने क्रान्तिकारी उदबोधन में सभी आर्य जनों को पिछड़ी जातियों और दलितों को गले लगाने और अपने आप को जागृत करने का संकल्प दिलवाया।

इस कार्यक्रम में श्री अंकित शास्त्री जी के मधुर भजनों का सभी आर्य जनों ने आनन्द उठाया और रविवार को पांच कुंडीय यज्ञ का आयोजन भी किया गया जिसके ब्रह्मा आचार्य आनन्द जी और आचार्य यदुनाथ शास्त्री जी थे। इस कार्यक्रम में समाज के कई गणमान्य व्यक्तियों जैसे श्री विरेन्द्र गोयल (जिला अध्यक्ष केशव पुरम), श्री जोगेन्द्र खट्टर (महामंत्री अखिल भारतीय दयानंद) श्री सतीश चड्डा (महामंत्री, आर्य केन्द्रीय सभा), श्रीमती मीनू गोयल (निगम पार्षद त्रिनगर), श्री जितेन्द्र बनाती (प्रबंधक एस एम आर्य पब्लिक स्कूल) श्री मनीष भाटिया (कोषाध्यक्ष आर्य केन्द्रीय सभा), श्री रवि मल्होत्रा (प्रसिद्ध समाज सेवी), श्री जितेंद्र सैनी (प्रसिद्ध समाज सेवी, म्यांमार) श्री विजय मंगला जी ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया।

इस कार्यक्रम का कुशल मंच संचालन महामंत्री श्री अजय कालरा जी द्वारा किया गया। आर्यसमाज के अधिकारियों और सभी धर्म प्रेमी सज्जनों हर्षवर्धन आर्य, अजय भाटिया, ईश्वर पाल आर्य, डॉ तृप्ति शास्त्री, बृजेश आर्य, राजेश सिंघल, अजय कालरा, संजय आर्य,नरेंद्र कालरा, संजय सैनी, नवीन सेठी, अरविन्द हंस, आशीष, अनिरुद्ध ने इस कार्यक्रम में सम्मिलित होकर, अपना विशेष योगदान देकर इस कार्यक्रम को सफल बनाया।

- मन्त्री

जबलपुर में 51 कुण्डीय महायज्ञ एवं विशाल शोभायात्रा

सबसे महान है - आर्यसमाज का गौरवशाली इतिहास - विनय आर्य

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150 वें स्थापना दिवस के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में आर्य समाज जबलपुर, मध्यप्रदेश द्वारा 28 सितंबर से 1 अक्टूबर 2023 तक 51 कुण्डीय सर्व कल्याण महायज्ञ एवं विशाल शोभायात्रा का समारोह पूर्वक समापन हुआ। इस अवसर पर 29 सितंबर 2023 को विशेष भव्य आर्य शोभा यात्रा का आयोजन किया गया, जिसमें स्वामी ऋतस्पति जी परिव्राजक, अध्यक्ष, आदर्श गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद, एवं अन्य गुरुकुलों के आचार्य, वैदिक विद्वान एवं संन्यासीगण सम्मिलित हुए। 1 अक्टूबर 2023 को इस भव्य समारोह का समापन हुआ। जिसमें स्वामी ऋतस्पति जी महाराज, आचार्य वागीश जी और अन्य महानुभावों ने अपना विशेष उद्बोधन दिया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने आर्यसमाज के गौरवशाली इतिहास के प्रेरक संस्मरणों को आधार बनाकर बताया कि आर्य समाज क्या था और किस तरह से आर्य समाज ने आधुनिक भारत के निर्माण में अहम भूमिका का निर्वहन किया है। आपने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती के 2 वर्षीय आयोजनों का वर्णन करते हुए कहा कि यह दो वर्ष हम सबके लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। हम अपने इतिहास को जानें और समझें कि आर्य समाज जैसा सेवा का इतिहास पूरे भारतवर्ष में नहीं हैं। उन्होंने लाला लाजपत राय द्वारा स्थापित स्वदेशी पूंजी के प्रथम (पंजाब नेशनल बैंक)एल.आई. सी.(अनाथालय) के विषय में विस्तार से बताया कि किस तरह महर्षि दयानन्द के अनन्य अनुयायी लाला लाजपत राय ने तन-मन और धन से राष्ट्र निर्माण में योगदान दिया। आपने भारत की वर्तमान स्थिति को इतिहास के साथ जोड़कर उपस्थित जनसमूह को

जागृति प्रदान करते हुए कहा कि देश की आजादी से पूर्व जब परिवर्तन की जरूरत थी तब भी आर्य समाज ने ही परिवर्तन की लहर चलाई थी और आज जब हर रूप में वातावरण विषैला होता जा रहा था, तब भी आर्य समाज ही परिवर्तन के इस इतिहास को दोहराएगा। *- मन्त्री*

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती कविताओं की रचना करें और पुरस्कार पाएं

द्विशताब्दी जन्म जयन्ती

महर्षि दयानन्द आर्य जाति का, दिव्य नव्य, ध्रुवतारा।
द्विशताब्दी जन्म जयंती, मना रहे जग सारा।।
।। यह सौभाग्य हमारा।।

सकल विश्व में जन-गण-मन में, सत्य सुधा बरसाया।
प्रभु कृपा से भारत भू पर, अनुपम योगी आया।
जिनके आने से वेद-धर्म का, चमका पुनः सितारा।।
द्विशताब्दी जन्म जयन्ती, मना रहे जग सारा।।
।। यह सौभाग्य हमारा ।।

सच्चाई का सूर्य सूरमा, अद्भुत था ब्रह्मचारी।
पाँच हजार वर्षों से भू पर, बिगड़ी बात सुधारी।
अशुर शक्तियाँ छिन्न-भिन्न कर, वैदिक ज्ञान प्रसारा।।
द्विशताब्दी जन्म जयन्ती, मना रहे जग सारा।।
।। यह सौभाग्य हमारा।।

गुरुवर का आदेश प्राप्त कर, वेदों का उद्धारक।
चला राष्ट्र में प्राण फूंकने, राष्ट्र धर्म उन्नायक।
हरिद्वार, काशी, मथुरा मे, अधर्मियों को ललकारा।।
द्विशताब्दी जन्म जयन्ती, मना रहे जग सारा।।
।। यह सौभाग्य हमारा।।

खण्डन खड्ग से खण्डित करके सब मिथ्या प्रमाण।
सिद्ध किये शास्त्रार्थ में 'संजय' वेदों मे विज्ञान।
मचे तहलका मजहबियों में, बह निकली शिव धारा।।
द्विशताब्दी जन्म जयन्ती, मना रहे जग सारा।।
।। यह सौभाग्य हमारा।।

महर्षि दयानन्द आर्य जाति का, दिव्य नव्य, ध्रुवतारा।
द्विशताब्दी जन्म जयन्ती, मना रहे जग सारा।।
।। यह सौभाग्य हमारा।।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के अवसर पर आर्य संदेश के सभी आयु वर्ग के पाठकों से अनुरोध है कि महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर विभिन्न घटनाक्रमों पर आधारित कविता की रचना करके **सम्पादक, आर्य सन्देश, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड़, नई दिल्ली 110001**, पर भेजें अथवा **aryasandeshdelhi@gmail.com** पर ईमेल करें। आपकी स्तरीय कविता को आर्य संदेश साप्ताहिक में प्रकाशित किया जाएगा और विशेष अवसर पर आपको पुरस्कृत भी किया जाएगा।

प्रथम पृष्ठ का शेष

गुजरात प्रान्तीय 'ज्ञान ज्योति पर्व' उल्लास पूर्वक सम्पन्न

200वीं जयन्ती के अवसर पर गणतन्त्र दिवस परेड में सम्मिलित गुजरात की झांकी को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के चित्र, चरित्र और शिक्षाओं को समर्पित करने की रखी मांग

जी आर्य ने अपने स्वागत भाषण में मंचस्थ सभी महानुभावों का, सभी विशिष्ट अतिथियों का तथा सभी आर्यजनों का करतल ध्वनि के साथ स्वागत और अभिनन्दन किया। उसके बाद कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे माननीय राज्यपाल महोदय का तथा मुख्य अतिथि के रूप में पधारे माननीय मुख्यमंत्री जी का प्रान्तीय सभा के प्रधान, महामंत्री तथा वरिष्ठ

- शेष पृष्ठ 6 पर

चण्डीगढ़ में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की 200 वीं जयन्ती पर भजन संध्या

सी.एल. अग्रवाल डी.ए.वी. मॉडल स्कूल सै.-7बी, चंडीगढ़ द्वारा स्वामी दयानंद सरस्वती जी की 200 वीं जयंती के अवसर पर भजन संध्या का आयोजन बड़ी सफलता के साथ विद्यालय के प्रांगण में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में डी.ए.वी. विद्यालयों के प्राचार्यगण और आर्य समाज संस्थाओं के गणमान्य सदस्य उपस्थित हुए।

कार्यक्रम का प्रारंभ वैदिक गायत्री मंत्र उच्चारण एवं दीप प्रज्जवलन के साथ हुआ। इस अवसर पर विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती ज्योतिका आहूजा ने आए हुए समस्त अतिथियों एवं अभिभावकों का भव्य स्वागत किया। भजन संध्या कार्यक्रम में विद्यालय के कक्षा 3 से 5वीं तक के विद्यार्थियों, अध्यापिकाओं एवं शास्त्री जी श्री हर्षवर्धन जी के द्वारा भजन प्रस्तुत किए गए, जिन्हें सुनकर श्रोताओं का मन मंत्रमुग्ध हो गया। अपने भजनों के द्वारा विद्यार्थियो ने ओ३म् के नाम को सर्वोपरि बताया और इसका हर रोज जप करने को कहा।

कार्यक्रम में विशिष्ट एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी मान्यवर श्री एच. आर. गंधार जी ने आर्य समाज के योगदान और वेदों के महत्व पर अपने प्रखर विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने विद्यार्थियों और सहयोगियों को इस शुभ अवसर पर बधाई दी और आशीर्वचन द्वारा सबके उज्जवल भविष्य की कामना की।- ***प्रधानाचार्या***

Initial Stage of Reform (From 1863-1866 A.D)

Continue From Last Issue

It will be a mistake to conclued that Swami Dayanand, had started the process of Reform with great speed, just after he left Gurnji's Ashram. While starting from there he had (1)strong knowledge of Sanskrit-vyakran and books relating to ideology (2) complete Brahmcharya, wisdom, courage and good quality of delivering speech. (3) He was quite confident that the state of Dharm was deteriorated after observing the condition of the wise men, sadhus and persons related to different religeons. He was determined to bring complete reform and plead for true Dharm. It is also true that he had to gain some more qualities and experience for work of reforming. Swami Daya Nand possessed many qualities needed for reform. But still he had to gain some more experience. (1) Swamiji did not have all the four Vedas. Search for books of Vedas was in process. He had not got full chance of discussion about Vedas. (2) Vast knowledge about the world is possible only by travelling for and wide. He could not got required chance of contacting persons having families and the priest to discuss and understand the real problems in the society. (3) Process of reform can be started only after understuding the real problems. One has to performs so many experiments one after the other for complete reform. Methods can be changed from time to time as required. Even the most experienced person changes the step if he feels so.

The work of reform performed by Swamiji for first three years, was just like an experiment. That was the initial stage of the best reforming process. That stage was likely to become a vital process of reform to be done after some years. We find all the qualities of work done by determination which prove to be source of success. We don't find to judge the success of weak at this stage which helped the process to be complete. Outlines of work of improvement were decided, it only needed time to fulfill the desired work. It also needed experience.

Swamiji brought sufficient required changes in 3 years. The first and the main was opposition of 'Idol Worship'. He had stopped believing in Idol worship when he observed mice eating rice from the idol of 'Shiva' (Shivling) on the occasion of 'Shiv Ratri'. Hatred produced at that occasion changed to 'Belief Just quite opposite to the pervailing belief.' Considering 'Idol worship' as confusing act, Swamiji made his mission of his life to preach for image less, faultless and unique form of Almighty God. The reformers are expected to preach for 'faith in God' as described above. Any reformer or establisher of 'Dharm' is judged by his explanation about 'God'. Views about 'God' are the measuring God of 'Religions' (Dharm). Dharmo-pdeshak knows that he can ont change the views of avdience until and unless he bring great change in their thinking and belief (views). If someone thinks that he can make the mangoes sweet by sweeting the leaves of the mango tree, he would be disappoints. So many people did such experiments and failed. Fruit will be sweetened only when the tree is given proper and suitable care. Feeling of bringing reform in people's feeling started in Swami Daya Nand's mind only when he had hatred and disbelief for the concept of 'Idol worship'. This was the first bolt in the root of wrong views about God. With increase in knowledge and having chances to attend speeches of appropriate gurus, the feeling produced in the beginning became every strong.

After completing his studies, the first message he gave to the people was Worship of 'Image less God' From Mathura he reached Agra directly and stayed in the garden of Lala Gallamal Roop Chand near the banks of Yamuna. He pleaded against Idol Worship in his speeches continuously. He started katha (story) of 'Panchdashi' In end of the 16th Karika (Part) it was said, "Shadow of God falls on the Maya and he overpowers Maya and is called God".

To be Continue.....

पृष्ठ 5 का शेष

अहमदाबाद में रिवर फ्रंट पर 'ज्ञान ज्योति पर्व'

उपप्रधान द्वारा पगड़ी और पीतवस्त्र पहिनाकर एवं स्मृति-जिन्ह देकर हार्दिक स्वागत किया गया। ज्ञान ज्योति पर्व के इस शुभ अवसर पर मुख्यमंत्री भूपेन्द्र भाई पटेल ने कहा कि जब पूरे देश में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती मनाई जा रही है तो मुझे भी इसमें शामिल होने का अवसर मिला है। श्री नरेंद्र भाई द्वारा दिये हुए 'विरासत भी और विकास भी', इस नारे पर चलते हुए हमें मिलकर देश के इस अमृतकाल को अपनी संस्कृति का स्वर्णकाल बनाने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए।

गुजरात के माननीय राज्यपाल आचार्य देवव्रतजी ने कहा कि देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों को पूरे देश में स्थापित करने के उद्देश्य से उनकी 200वीं जयन्ती पर पूरे देश में होने वाले अनेक कार्यक्रमों का शुभारंभ 12 फरवरी 2023 को नई दिल्ली में 'ज्ञान ज्योति पर्व' के रूप में किया था। उन्होंने कहा कि ऋषि दयानन्द जी ने अपनी वैचारिक क्रान्ति द्वारा समाज में व्याप्त अंधविश्वास, पाखण्ड, छूआछूत जैसी अनेक कुरीतियों को दूर करने हेतु एक अद्भूत जागृति पैदा की।

इस अवसर पर राज्य मंत्री श्री जगदीश विश्वकर्मा, अहमदाबाद की मेयर श्रीमती प्रतिभा जैन, विधायक श्री जीतूभाई पटेल, श्री हर्षदभाई पटेल, गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य, मंत्री श्री दीपकभाई ठक्कर, वरिष्ठ उपप्रधान श्री वाचोनिधि जी आर्य, वैदिक प्रवक्ता आचार्य वागीश जी, सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री प्रकाशजी आर्य, राजस्थान के पूर्व लोकायुक्त श्री सज्जनसिंह जी कोठारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक जी आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री किशनलाल जी गेहलोत, मुंबई आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेद प्रकाश जी आर्य सहित अन्य गणमान्य लोग बड़ी संख्या में उपस्थित थे। गुजरात के गांधीधाम, जामनगर, ध्रांगध्रा, अहमदाबाद, भावनगर, राजकोट, वडोदरा, सूरत, पोरबंदर, रोजड़, टंकारा, नडियाद, जूनागढ़, वढ़वान, सुरेन्द्रनगर, भरूच, नेत्रंग, गोंडल सहित व गुजरात के बाहर से 4000 से भी अधिक आर्यजन कार्यक्रम में उपस्थित रहे। इस अवसर पर 200 कुंडीय हवन का आयोजन भी हुआ।

इस अवसर पर जामनगर के आर्य कन्या विद्यालय की कन्याओं द्वारा चार प्रमुख सामाजिक समस्याओं पर आधारित एक भव्य नाटिका प्रस्तुत की गई, जो इस समग्र कार्यक्रम में सर्वाधिक प्रशंसा तथा आकर्षण का केन्द्र रही। सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री प्रकाशजी आर्य ने अपने संक्षिप्त सम्बोधन में मुख्यमंत्री महोदय के समक्ष कुछ अपेक्षाएं (माँगें) प्रस्तुत कीं जिनमें सबसे प्रमुख अपेक्षा यह थी कि आगामी 26 जनवरी 2024 को गणतंत्र दिवस पर निकलने वाली परेड में गुजरात राज्य की झांकी में ऋषि दयानन्द की 200वीं जयन्ती पर उनका विशाल चित्र तथा उनके कुछ महत्वपूर्ण वाक्यों को अवश्य प्रदर्शित किया जाये। 'ज्ञान ज्योति पर्व' का यह अति भव्य एवं अनुशासित कार्यक्रम प्रान्तीय सभा के महामंत्री श्री दीपकभाई ठक्कर के धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात् राष्ट्रीय गान के साथ सम्पन्न हुआ। - ***मन्त्री***

पृष्ठ 2 का शेष

समलैंगिक विवाह को मान्यता नहीं

उन्होंने कहा कि न्याय की समीक्षा के क्षेत्राधिकार का इस्तेमाल करते वक़्त कोर्ट को विशेष तौर पर उन मामलों से दूर रहना चाहिए जो विधायिका के क्षेत्राधिकार में आते हों। इस बात की व्याख्या करते हुए जस्टिस चंद्रचूड ने समलैंगिक संबंधों को शहरी और अभिजात्य वर्ग की सोच बताने की दलीलों के फ़ैसले का जवाब दिया और कहा कि ये विचित्रता है, शहरी और अभिजात्य वर्ग की चीज़ नहीं है। भारत में यह प्राचीन काल से जाना जाता है और प्राकृतिक घटना है। उन्होंने कहा कि विवाह की अवधारणा कोई सार्वभौमिक अवधारणा नहीं है और न ही यह स्थिर है। अगर संविधान के अनुच्छेद 245 और 246 को सातवीं अनुसूची की तीसरी सूची में पांचवें प्रविष्टि के साथ पढ़ा जाए तो शादी को मान्यता और उस पर क़ानून बनाने का अधिकार संसद व राज्य विधानसभा के पास है। आर्य समाज सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले का स्वागत करता है और पुरुष से पुरुष और स्त्री से स्त्री के विवाह की कानूनी मांग करने वाले लोगों को भी यह विचार करने की सलाह देता है कि यह अप्राकृतिक और अमानवीय सम्बन्ध सफल कैसे हो सकता है। यह प्रवृत्ति तो पशुओं में भी नहीं है। विवाह का मतलब तो यही होता है कि अपने अपने गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार स्त्री और पुरुष विवाह करके संतान उत्पन्न करें और उन्हें पढ़ा लिखाकर सुयोग्य बनाएं और राष्ट्र के सभ्य नागरिक और सेवा भावी बनाकर मानव सेवा और राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दें। अब प्रश्न ये उठता है कि एक पुरुष दूसरे पुरुष से अथवा एक महिला दूसरी महिला से विवाह करके क्या संतान उत्पन्न कर सकते हैं, अगर नहीं तो फिर यह कैसा सम्बन्ध? - ***सम्पादक***

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः' अर्थात् यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए ***मो.नं. 9650183335 पर*** सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की वैदिक रीति से व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं। - ***संयोजक***

प्रथम पृष्ठ का शेष

आर्यसमाज द्वारका के लिए डीडीए....

ऐसा नहीं है कि प्रयास नहीं हुआ, पर डीडीए की जमीन आबंटन पॉलिसी बदल जाने के चलते कुछ समस्या आई। आर्यसमाज की स्थापना तो यहां 2005 में ही हो चुकी थी, घर-घर में सत्संग चलाए जा रहे थे, किन्तु अभी अपना भवन नहीं था।

गत दिनों डीडीए ने अपनी नई पॉलिसी के अन्तर्गत द्वारका में धार्मिक प्लाट नीलामी के लिए निकाले हैं, ये हमारे लिए सुनहरा अवसर है, पर उसमें भाग लेने के लिए तीन शर्तें हैं -

1. सोसायटी पांच वर्ष पुरानी रजिस्टर्ड होनी चाहिए।
2. सोसायटी के 70% सदस्य द्वारका के निवासी होने चाहिए।
3. सोसायटी के बैंक खाते में जमीन की सुरक्षित मूल्य का डेढ़ गुणा पैसा होना चाहिए।

पहली दोनों शर्तें हम पूरी करते हैं, किन्तु तीसरी शर्त बहुत बड़ी है। उसका कारण है कि 400 वर्ग मीटर के प्लाट का मूल्य 78000/- रुपये वर्ग मीटर के रेट से लगभग 3,15,00000/- (तीन करोड़ पन्द्रह लाख) रुपये बैठता है और उस पर 50% जोड़ें तो लगभग 4 करोड़ 72 लाख बैठेगा, इतनी धनराशि की व्यवस्था अकेले द्वारका आर्यसमाज के द्वारा कर पाना सरल नहीं है।

⋆ द्वारका आर्यसमाज के पास पहले से लगभग 1 करोड़ की व्यवस्था है।

⋆ द्वारका आर्यसमाज के सभी सदस्य मिलकर लगभग 75 लाख की व्यवस्था करेंगें।

⋆ बाकि की व्यवस्था दिल्ली के सब आर्यजन और आर्यसमाज मिलकर करेंगे, तो हमें आशा है कि इस बड़े कार्य को करने में सक्षम हो पाएंगे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक दिनांक 22 अक्तूबर, 2023 में इस विषय पर विचार हुआ और निर्णय हुआ कि सब आर्यसमाजों को इस कार्य के लिए सामूहिक जिम्मेदारी मानकर सहयोग करने के लिए अपील की जाए। अत: आपकी सेवा में निवेदन है कि इस विशाल यज्ञ में अपनी आर्यसमाज की ओर से एक **"ऐसी राशि"** जो इस कार्य की पूर्ति में सहायक हो सके अवश्य ही भिजवाने की कृपा करें। ये कार्य आप सबके दिए हुए उदार हृदयी सहयोग के बिना पूरा होना असम्भव है।

इसके लिए हमें समय कम मिला है। हम केवल बोली में तभी भाग ले सकते हैं जब हमारे बैंक एकाउंट में 4.75 करोड़ की राशि हो, ये ही एक सबसे बड़ी समस्या है। अत: आपसे पुन: अनुरोध है कि सभी महानुभाव आगामी रविवार तक इसके लिए चैक/बैंक ड्राफ्ट आदि तुरन्त भिजवाने की कृपा करें। हम अन्तिम तिथि से पहले इस कार्य को करना चाहते हैं। **अन्तिम तिथि 5 नवम्बर, 2023 है, 6 नवम्बर को इसकी बोली लगेगी।**

हम सबकी इच्छा है कि दिल्ली की द्वारका जैसी नगरी में भी महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयन्ती पर एक नए आर्यसमाज का निर्माण हो जाए। आप अपने सदस्यों से भी इस हेतु सहयोग देने की प्रार्थना कर सकते हैं। आर्यसमाज द्वारका को दिया गया दान/सहयोग आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर छूट प्राप्त है।

आर्यसमाज का कार्य परमात्मा का कार्य है, इसको विस्तार देना हमारा कर्त्तव्य है। परमात्मा इस महान कार्य में अवश्य सहायक होंगे। धन्यवाद सहित

ह्वभवदीय

(धर्मपाल आर्य)	(विद्यामित्र ठुकराल)	(विनय आर्य)
प्रधान	कोषाध्यक्ष	महामन्त्री

पृष्ठ 3 का शेष

समय है मूल्यवान सम्पदा .....

मोबाईल का उपयोग जरूरी सा हो गया है, किंतु टी.वी. और मोबाइल का सही उपयोग किया जाए तो अच्छी बात है वरना इनके दुष्प्रभाव से बचना बड़ा कठिन है। ये दोनों उपकरण मनोरंजन के साथ-साथ विद्यार्थी को अनेक तत्वों का बोध भी होता है। सामान्य ज्ञान के लिए भी यह अच्छा साधन है, लेकिन ज़्यादा प्रयोग करने से भी विद्यार्थी की हानि भी होती है। शारीरिक हानि-आंखें कमजोर हो जाती हैं, मानसिक- मन पढ़ाई में नहीं लगता और स्मरण शक्ति कमजोर हो जाती है। कुछ विद्यार्थी लगातार टी.वी. पर नजर गड़ाए रखते हैं, अपना कीमती समय वे नष्ट कर देते हैं। जो उन्हें याद रखना चाहिए उसे स्मरण नहीं करते, टी.वी. के कार्यक्रम दिमाग में नोट कर लेते हैं। दरअसल एक्टर, डायरेक्टर और प्रोडयूसर से कभी आप मिलेंगे तो ज्ञात होगा कि यह सब ड्रामा मात्र है। एक कहानी के ऊपर एक्टर एक्टिंग करता है, डायलाग बोलता है और उसमें अनेक लोगों का परिश्रम होता है। लेकिन एक्टर फिल्म या नाटक की आत्मा की तरह होता है। कुछ भी हो, सारे कार्य एक्टर को महान दर्शाने के लिए होते हैं। इसलिए अच्छे दृश्यों को देखने का प्रयास करो। टी.वी. देखना अच्छी बात है, लेकिन सीमाएं (मर्यादा) समय का ध्यान रखकर और अच्छे, उपयोगी प्रोग्राम देखें तो विशेष लाभ होता है। टी.वी. से हम शिक्षा ले सकते हैं, पर विद्यार्थी की एक समय सीमा होती है। सीमा में रहकर हर कार्य करना उचित है। कवि ने प्रसंग के अनुरुप अच्छा कहा-

अति की भली न बोलना,
अति की भली न चुप।
अति की भली न बरसना,
अति की भली न धूप।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के अन्तर्गत
वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य
अब
amazon
पर भी उपलब्ध
अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज कालकाजी
ए ब्लाक, नई दिल्ली-110019

प्रधान : श्री रमेश कुमार गाड़ी
मन्त्री : श्री आदर्श सलूजा
कोषाध्यक्ष : श्री प्रवीण रेलन

खेद व्यक्त

खेद है कि प्रेस में तकनीकी खराबी होने के कारण आर्यसन्देश साप्ताहिक के गत अंक 44-45 वर्ष 46 दिनांक 16 से 22 एवं 23 से 29 अक्तूबर 2023 प्रकाशित नहीं हो सके। पाठकों को हुई असुविधा के लिए खेद है। - *सम्पादक*

समाजसेवी एवं दानी पुरूष सदैव प्रेरणा के स्त्रोत रहे हैं : योगेश मुंजाल

दिल्ली, 13 अक्तूबर (रेपको न्यूज)। समाजसेवी एवं दानी महानुभावों की जयंती इसलिए मनाई जाती है ताकि उनकी निस्वार्थ सेवाओं से समाज के अन्य समर्थ लोग भी प्रेरणा लें। उपरोक्त शब्द लाला दिवान चंद ट्रस्ट के संरक्षक श्री योगेश मुंजाल ने ट्रस्ट द्वारा आयोजित लाला दिवान चंद द्वारा संयोजित 139 जन्म जयंती के अवसर पर कहे। उल्लेखनीय है लाला दिवान चंद का 139वां जन्मदिन आर्य समाज परिसर में बड़े भव्य रूप से मनाया गया। प्रातः 9.00 बजे हवन उपरांत 10 से 12 बजे तक कार्यक्रम वैदिक केंद्र के स्लिट एरिया में सम्पन्न हुआ। दीप प्रज्वलन एवं स्वागत श्री एस सी पुरी, अध्यक्ष लाला दिवान चंद ट्रस्ट श्री योगेश मुंजाल संरक्षक, श्री विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि, अजय सहगल, आर्य समाज मंदिर की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

इस अवसर पर श्री विनय आर्य का व्याख्यान स्वामी दयानंद सरस्वती की शिक्षाएं और अन्य के सामाजिक समाज में उनकी प्रसंख्याएं का संचालन श्री एस के साहनी ने किया। इस अवसर पर लगभग 150 आर्यजन उपस्थित थे।

शोक समाचार

श्री योगेश आर्य जी का निधन

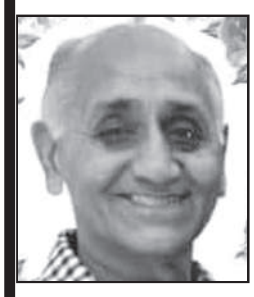

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के पूर्व उपमन्त्री एवं अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के पूर्व कोषाध्यक्ष श्री योगेश आर्य जी का दिनांक 15 अक्तूबर, 2023 को निधन हो गया। वे गत काफी समय से कोमा में थे। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ मोक्षधाम शमशान घाट, सैक्टर-32 गुरुग्राम में किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 17 अक्तूबर को सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों एवं निकटवर्ती अन्य अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

स्वामी मुनीश्वरानन्द जी का निधन

पश्चिम ओडिशा में शिक्षा, संस्कृति और समृद्धि के उत्थान के लिए नूंआपाली जिला बरगड़ ओडिशा में गुरुकुल नवप्रभात आश्रम की स्थापना करने वाले स्वामी मुनीश्वरानंद जी का 8 अक्टूबर 2023 को 88 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। अंत्येष्टि संस्कार अगले दिन पूर्ण वैदिक रीति के साथ संपन्न हुआ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परम एपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 01-02-03/11/2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 1 नवम्बर, 2023

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
वर्ष 2024 का कैलेण्डर प्रकाशित

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
मो. 09540040339
ऑन लाइन खरीदें
www.vedicprakashan.com

प्रतिष्ठा में,

JioTV Jio TV+
आर्य समाज का एक मात्र टीवी चैनल
आर्य सन्देश टीवी
Arya Sandesh TV
अब जियो टीवी नेटवर्क पर भी
Jio Set Top Box और JIO मोबाइल App पर उपलब्ध

Samaano mantrah samitih samaani samaanam manah saha chittameshaam|
Samaanam mantramabhi mantraye vah samaanena vo havishaa juhomi||
- Rig 8-49-3

Commemorating
200 YEARS OF MAHARSHI DAYANAND BIRTH
150 YEARS OF ARYA SAMAJ FOUNDATION

INTERNATIONAL ARYA MAHASAMMELAN
(Largest Global Summit of Arya Samaj Ever, outside India)
HOSTED BY ARYA SAMAJS OF TRI-STATE OF NEW YORK, NEW JERSEY AND CONNECTICUT

July 18-21, 2024 | New York

Featuring
Keynotes from World-renowned Vedic Scholars
Symposiums/Exhibits featuring Life of Maharshi Dayanand and Contribution of Arya Samaj
Workshops on Vedic Meditation, Healthy Living, Mental Health
Arya Samaj Strategy Roundtable Discussions and Leadership Summit
- 200 Multi Kund Mahayajnya
- Vedic Book Fair
- Global Youth Camp
- Arya Parivar Reunion
- Presentations from Arya Samajs Across the Globe
- Captivating Cultural Programs

महासम्मेलन में भाग लेने के इच्छुक महानुभाव तत्काल रजिस्ट्रेशन कराएं
https://tinyurl.com/iams2024ny

STAY TUNED FOR MORE INFORMATION : www.aryasamaj.com

भारत में फेले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16 — मुद्रित मूल्य ₹60 प्रचारार्थ मूल्य ₹40
विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16 — मुद्रित मूल्य ₹100 प्रचारार्थ मूल्य ₹60
पॉकेट संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹80 प्रचारार्थ मूल्य ₹50
विशिष्ट पॉकेट संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹150 प्रचारार्थ मूल्य ₹ 100
स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8 — मुद्रित मूल्य ₹200 प्रचारार्थ मूल्य ₹120
उपहार संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹1100 प्रचारार्थ मूल्य ₹750
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द — 250 160
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द — 300 200

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group
Our milestones are touchstones

TECHNOLOGY DRIVING VALUE
TOWARDS CREATING A
CLEANER | GREENER | SAFER
TOMORROW.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह